शेखीबाज मक्खी

नक्शे के जरिए कहानी की तहों में उतरने की एक कोशिश

रविकांत

क्या कोई कहानी सिर्फ पढ़ने भर से समझ में आ जाती है? या याद रह जाती है? हम पढ़ते या सुनते तो कई सारी कहानियां हैं लेकिन उनमें से हमें याद कोई-कोई कहानी ही रह पाती है। यकीनन उसमें कोई न कोई ऐसी बात जरूर रहती आई होगी जिसकी वजह से उसे भुला पाना नामुमकिन सा होता है। फिर जो कहानी अपने ही बूते पर याद रह जाए, उसे सुनाना या इस्तेमाल करना भी थोड़ा आसान हो जाता है। तो हमने यह सोचा कि कहानी को रट कर याद करने के बजाय क्यों न उसका नक्शा बनाया जाए। ताकि उस कहानी से जुड़ी हमारी समझ भी थोड़ी गहरी हो और उसे समझने की कोशिश में वह हमें याद भी हो जाए।

कहानी का नक्शा बनवाने पर तो अध्यापिकाओं के समूहों में कई बार काम करवाया था। इसमें कहानी को पढ़वा कर उसमें से तीन चार चीजों को पहचानने व दर्ज करने के लिए कहा जाता था। वे चीजें थीं - कहानी के प्रमुख व गौण पात्र, कहानी के घटने की जगह, कहानी की केन्द्रीय समस्या, कहानी की प्रमुख घटनाएं तथा केन्द्रीय समस्या का हल। कई बार कहानी पढ़वा कर कहानी का नक्शा भी बनवाया। कई बार बने हुए नक्शों को साथी अध्यापिकाओं के साथ अदल-बदलकर के उन पर कहानी भी बनवाई थी। लेकिन हाल तक काम करते वक्त पूरा जोर इस बात पर रहता था कि कहानी में आई घटनाओं को अलग-अलग करके साफ तौर से पहचान लिया जाए। उन्हें सरल व साफ-सुथरी भाषा में व्यक्त कर दिया जाए। अनावश्यक बातों व घटनाओं को पहचान कर हटा दिया जाए।

तो कहानियों की किताबों की जगह इस बार अध्यापिकाओं को रिमझिम (एनसीईआरटी की हिन्दी भाषा की किताबें) में से कहानियां चुनकर उनकी मदद से कहानी का नक्शा बनाने का काम दिया गया। सभी ने अपनी-अपनी कक्षा की रिमझिम से कहानी चुनकर उस पर नक्शा बनाया। एक अध्यापिका ने कक्षा 3 की रिमझिम में से शेखीबाज मक्खी नामक कहानी चुन ली। उसका नक्शा भी बना दिया। हमने उस अध्यापिका से कहा कि चूंकि उसने कहानी का नक्शा बनाया है। उसकी प्रमुख घटनाओं को पहचाना है तो अब तक तो उसे कहानी याद रह गई होगी। क्यों न पहले वह कहानी सुना दे या कहानी का नक्शा ही बता दे। अध्यापिका ने अपने तैयार किए कहानी के नक्शे को देखे बिना उसे मौखिक रूप से बताने की कोशिश की।

बहुत जल्द ही उसने एक मुश्किल सभी के सामने रखी कि उसे पात्र और घटनाएं तो याद आ रही थीं लेकिन यह याद नहीं आ रहा था कि किस पात्र के बाद कौनसा पात्र कहानी में दाखिल होगा या कौनसा पात्र कौनसी घटना में शामिल होगा। यह एक वाजिब मुश्किल थी। इसका एक पारंपरिक हल तो यह हो सकता था कि वह कहानी को रटकर याद न रह पाने की मुसीबत को जड़ से ही उखाड़ देती। लेकिन अगर कहानी को

रटना ही होता तो कहानी का नक्शा बनाने के फेर में पड़ने के बजाय उसे ज्यों का त्यों ही निगल न लिया जाता। तो पात्रों के कहानी में दाखिल होने की सही जगह को समझने की कोशिश में एक सवाल उठाया गया कि क्या कहानी में पात्र मनमाने तरीके से आ रहे हैं या उनके आने के क्रम में कोई तर्क छुपा है। अगर कोई तर्क है तो शायद उसको पहचान लेने पर पात्रों की आवा-जाही को समझना आसान हो जाए।

अध्यापिका द्वारा बनाया गया कहानी का नक्शा

इस सवाल के साथ ही कहानी को ठीक से समझने के लिए हमने अध्यापिका द्वारा बनाए गए कहानी के नक्शे को सुना। अध्यापिका ने कहानी का नक्शा कुछ इस तरह बनाया था।

कहानी का नाम : शेखीबाज मक्खी

केन्द्रीय समस्या : मक्खी का घमंडी होना, शेर का गुस्से में आग बबूला होना।

प्रमुख पात्र : मक्खी, शेर

गौण पात्र : हाथी, लोमड़ी, मकड़ी

जगह : जंगल

घटनाएं :

1. शेर का भोजन करके आराम करना
2. मक्खी का शेर के पास आकर उसको परेशान करना
3. शेर को गुस्सा आना
4. मक्खी का शेर को सोने नहीं देना
5. शेर के पंजे मारने से उसकी नाक छिल जाना
6. शेर का घायल होना
7. हाथी का मिलना
8. मक्खी द्वारा हाथी से प्रणाम करवाना
9. लोमड़ी का हाथी और मक्खी को देखना
10. लोमड़ी का मंद-मंद मुस्कुराना
11. लोमड़ी का मक्खी को प्रणाम करना व उसकी तारीफ करना
12. मक्खी को घमंड का अहसास होना
13. लोमड़ी का मक्खी से झूठ बोलना कि मकड़ी ने उसको गाली दी
14. मक्खी को गुस्सा आना
15. मक्खी का मकड़ी के जाल में फंस जाना
16. लोमड़ी का यह देखकर हंसकर चले जाना।

समस्या का हल :

अपने आपको ज्यादा होशियर न समझना, गुस्से पर काबू रखना, किसी की बातों में न आना।

इस नक्शे को सुनते ही लगने लगा कि यह तो ठीक से बना नहीं। इसमें कई तरह की समस्याए महसूस होने लगीं। उस वक्त तो उन समस्याओं पर गहराई से बात न करके, कहानी को दोबारा सुनकर और सभी ने मिल कर कहानी का नया-नया नक्शा बना लिया। लेकिन इस वक्त उस नक्शे में मौजूद समस्याओं को पहचानना कहानी का नक्शा बनाने में आने वाली मुश्किलों को समझने में हमारी मदद करेगा।

अध्यापिका द्वारा बनाए कहानी के नक्शे में छुपी समस्याएं

शुरुआत हम केन्द्रीय समस्या से करते हैं। क्या शेर का आग बबूला होना कहानी की केन्द्रीय समस्याओं में से एक हो सकती है। कहानी में तो शेर की भूमिका शुरुआत के बाद बचती ही नहीं और न ही कहानी का अंत शेर के गुस्से पर काबू पा लेने से होता है जैसा कि केन्द्रीय समस्या के हल में लिया गया है। मक्खी का घमंडी होना फिर भी केन्द्रीय समस्या के काफी करीब है। इसी तरह केन्द्रीय समस्या के तीन हल दिए गए हैं। एक समस्या व उसके हल की बात तो हम कर ही चुके हैं। बाकी बचे दो हलों का केन्द्रीय समस्या से सीधा संबंध नजर नहीं आता। वे दोनों बातें किसी समस्या का हल होने के बजाय कहानी के अंत में बच्चों को दी जाने वाली सीख या शिक्षा की तरह नजर आती है।

शेखीबाज मक्खी

एक था जंगल। उस जंगल में एक शेर भोजन करके आराम कर रहा था। इतने में एक मक्खी उड़ती-उड़ती वहां आ पहुंची। शेर ने दो-तीन दिनों से स्नान नहीं किया था। इसलिए मक्खी शेर के कान के एकदम पास भिन-भिन-भिन करने लगी। शेर को बहुत मुश्किल से नींद आई थी। उसने पंजा उठाया। मक्खी उड़ गई... लेकिन फिर से शेर के कान के पास भिन-भिन शुरू हो गई।

अब शेर को गुस्सा आया। वह दहाड़ा- अरे मक्खी, दूर हट। वरना तुझे अभी जान से मार डालूंगा।

मक्खी ने धीरे से कहा- छि... छि... ! जंगल के राजा के मुंह से ऐसी भाषा कहीं शोभा देती है?

शेर का गुस्सा बढ़ गया। उसने कहा- एक तो मुझे सोने नहीं देती, ऊपर से मेरे सामने जवाब देती है! चुप हो जा... वरना अभी...

मक्खी बोली- वरना क्या कर लोगे? मैं क्या तुमसे डर जाऊंगी? मैं तो तुमसे भी लड़ सकती हूं। हिम्मत हो तो आ जाओ...!

शेर आग बबूला हो उठा। उसने कान के पास पंजा मारा। मक्खी तो उड़ गई पर कान का सिरा छिल गया। मक्खी उड़कर शेर की नाक पर बैठी तो उसने मक्खी को फिर पंजा मारा। मक्खी उड़ गई। अबकी बार शेर की नाक छिल गई।

मक्खी कभी शेर के माथे पर बैठती, कभी गाल पर, तो कभी गर्दन पर।

शेर पंजा मारता जाता और खुद को घायल करता जाता... मक्खी तो फट से उड़ जाती।

अंत में शेर ऊब गया, थक गया। वह बोला - मक्खी बहन, अब मुझे छोड़ो। मैं हारा और तुम जीतीं, बस।

मक्खी घमंड में चूर होकर उड़ती-उड़ती आगे बढ़ी। सामने एक हाथी मिला। मक्खी ने कहा - अरे हाथी... मुझे प्रणाम कर... मैंने जंगल के राजा शेर को हराया है। इसलिए जंगल में अब मेरा राज चलेगा। हाथी ने सोचा, इस पागल मक्खी से बहस करने में समय कौन बर्बाद करे।

हाथी ने सूंड़ ऊपर उठाकर मक्खी को प्रणाम किया और आगे बढ़ गया। सामने से आ रही लोमड़ी ने यह सब देखा। लोमड़ी मंद-मंद मुस्कराने लगी। इतने में मक्खी ने लोमड़ी से कहा - अरे ओ लोमड़ी, चल मुझे प्रणाम कर! मैंने जंगल के राजा शेर और विशालकाय हाथी को भी हरा दिया है।

लोमड़ी ने उसे प्रणाम किया। फिर धीरे से बोली - धन्य हो मक्खी रानी, धन्य हो! धन्य है आपका जीवन और धन्य हैं आपके माता-पिता। लेकिन मक्खी रानी, उधर वह मकड़ी दिखाई दे रही है न, वह आपको गाली दे रही थी। उसकी जरा खबर लो न!

यह सुनकर मक्खी गुस्से से लाल हो उठी।

मक्खी बोली - उस मकड़ी को तो मैं चुटकी बजाते खत्म कर देती हूं।

यह कहते हुए मक्खी मकड़ी की तरफ झपटी और मकड़ी के जाले में फंस गई। मक्खी जाले से छूटने की ज्यों-ज्यों कोशिश करती गई, त्यों-त्यों और भी अधिक फंसती गई... अंत में वह थक गई, हार गई।

यह देखकर लोमड़ी मंद-मंद मुस्कराती हुई वहां से चलती बनी।

योगेश जोशी

रिमझिम, कक्षा-3

कहानी के नक्शे में पात्रों व जगह की पहचान ठीक से की गई है। इस नक्शे की सबसे बड़ी समस्या इतनी छोटी-सी कहानी में 16 घटनाओं की पहचान किया जाना है। क्या इतनी घटनाएं इस कहानी में मौजूद हैं। अध्यापिका ने कहानी के पात्रों की छोटी-छोटी क्रियाओं जैसे, शेर को गुस्सा आना, लोमड़ी का मंद-मंद मुस्कुराना, लोमड़ी का हाथी को प्रणाम करना आदि को घटना का दर्जा दे दिया है। नतीजे में, कहानी की प्रमुख घटनाएं या तो पात्रों की क्रियाओं के धुंधलके में छिप गई हैं या इतनी बिखर गई हैं कि वे साफ-साफ दिखलाई नहीं पड़तीं। ऐसा क्यों हुआ होगा, इसे समझने के लिए कहानी व अध्यापिका द्वारा बनाए नक्शे को दोबारा पढ़ा तो पता चला कि अध्यापिका ने नक्शा बनाते वक्त कुछ जगहों पर तो वाक्यांशों को उठाकर घटना में तब्दील कर लिया था, जैसे, आराम करना, नाक छिल जाना, मंद-मंद मुस्कुराना आदि। और कुछ जगहों पर कहानी में आए वाक्यों को ही थोड़ा हेर-फेर करके उसे घटना का दर्जा दे दिया था, जैसे ''सामने आ रही लोमड़ी ने यह सब देखा'' से ''लोमड़ी का हाथी व मक्खी को देखना'' नामक घटना बना देना। या ''यह देखकर लोमड़ी मंद-मंद मुस्कुराती हुई वहां से चली गई'' से ''लोमड़ी का यह सब देखकर हंसकर चले जाना'' नामक घटना गढ़ लेना।

अब सवाल उठता है कि अध्यापिका ने ऐसा क्यों किया होगा? इसका एक जवाब तो इस तरफ खोजा जा सकता है कि हम सबका भाषाई प्रशिक्षण इस तरह का हुआ होता है कि लिखित सामग्री में से किसी सवाल का जवाब खोजने के लिए कहने पर हम उस जवाब को उसी सामग्री में से तलाश कर उसकी भाषा में या उसमें थोड़ा हेर-फेर करके लिखने के लिए प्रशिक्षित किए गए होते हैं। लेकिन हम इस तरह से प्रशिक्षित क्यों किए गए होंगे? मुझे लगता है कि संभवतः यह विद्यालयी शिक्षा व्यवस्था में लिखित भाषा पर बेइंतिहा जोर देने तथा उसे मौखिक भाषा से काटकर रखने का नतीजा है, जिसकी वजह से हम में से ज्यादातर में पूछे गए सवालों के जवाब लिखित सामग्री को समझकर अपने शब्दों में व्यक्त करने का आत्मविश्वास विकसित ही नहीं हो पाता। और हम बजाय अपना दिमाग व अपनी भाषा इस्तेमाल के दी गई लिखित सामग्री की नकल मारना ही बेहतर समझने लगते हैं।

हमने तो सोचा था कि कहानी का नक्शा बनाने की जद्दोजहद में 'तलछट शिक्षण' की तरह कहानी तो खुद-ब-खुद ही याद रह जाएगी। क्योंकि कहानी में जगह व पात्रों की पहचान करने तथा हरेक प्रमुख घटना को अलग-अलग करके पहचानने की कोशिश में उसे तीन-चार बार तो पढ़ना लाजमी था। पढ़ते वक्त इस सवाल को भी ध्यान में रखना था कि इस कहानी की प्रमुख घटनाएं कौन-कौनसी होंगी। फिर उन घटनाओं को अपने शब्दों में व्यक्त भी करना था। लेकिन उपरोक्त नक्शे ने हमारे सामने इस बात को उजागर कर दिया कि इसे ठीक से बना पाने की संभावनाएं बढ़ाने के लिए लिखित भाषाई कामों के साथ-साथ मौखिक भाषाई कामों को भी गहराई के साथ जोड़े जाने की बहुत जरूरत है। यानी कहानी का नक्शा बनाने का एक बेहतर तरीका यह हो सकता है कि लिखित कहानी का लिखित नक्शा बनाने से पहले उस कहानी का मौखिक नक्शा भी बनाया जाए ताकि कहानी की घटनाओं की ठीक से पहचान करने व उन्हें अपनी भाषा में व्यक्त करने की संभावनाएं बढ़ जाएं।

वैसे भी कहानी का नक्शा सिर्फ कहानी की तहों में उतरने में ही मदद नहीं करता। नक्शे की मदद से कहानी की तहों को खोलते/जमाने वक्त आपको लगातार सोचना पड़ता है। नक्शा बनाने के लिए जरूरी सवालों के जवाब कहानी में खोजने पड़ते हैं। उन जवाबों को अपने शब्दों में व्यक्त करना पड़ता है। अगर आप कहानी के वाक्यों को ही उठाकर रख देंगे तो नक्शा ठीक से नहीं बन पाएगा। इसमें पहले आपको घटना वाले हिस्सों की पहचान करनी पड़ती है। फिर उन घटनाओं को एक-दूसरे से अलगाना पड़ता है। हर घटना को अपने शब्दों में एक या दो वाक्यों में कहने की मशक्कत करनी पड़ती है।

कहानी का नया नक्शा

अध्यापिका द्वारा बनाए गए कहानी के नक्शे को सुनने के बाद समूह में बातचीत करके कहानी का नक्शा फिर से कुछ इस तरह से बनाया गया।

कहानी का नाम : शेखीबाज मक्खी

प्रमुख पात्र : शेर व मक्खी

गौण पात्र : हाथी, लोमडी व मकड़ी

जगह : जंगल

प्रमुख घटनाएं :

1. मक्खी के बार-बार काटने की वजह से खुद को घायल करके शेर ने हार मानी।
2. हाथी ने बगैर किसी ऐतराज के मक्खी से हार मान ली।
3. लोमड़ी ने मक्खी को मकड़ी के खिलाफ भड़काया/उकसाया।
4. लोमडी की बातों में आकर मकड़ी को मजा चखाने गई मक्खी, उसके जाल में फंस गई।

केन्द्रीय समस्या : मक्खी में घमंड का होना।

हल : घमंड की वजह से मक्खी का जाल में फंस जाना।

लेकिन इस काम को करने के बावजूद हमारी समस्या मुंह बाए खड़ी थी। हमें यह पता नहीं चल पा रहा था कि कौनसा पात्र किस घटना में आएगा और वह वहीं क्यों आएगा?

वैसे किस पात्र को कहानी में कब दाखिल होना है, यह जानने का एक और तरीका भी हो सकता था। आप किसी भी पात्र को कहानी में कहीं भी ले आएं। फिर कहानी को कह कर देखें। जैसे आप शेर की जगह लोमड़ी, हाथी की जगह शेर और लोमड़ी की जगह हाथी को रख कर कहानी पढ़ें। या शेर की जगह मकड़ी को रख कर कहानी सुनाएं। ऐसा करते ही यह साफ दिखने लगता है कि कहानी के पात्रों को उनके साथ घटी घटनाओं से अलगाते ही कहानी अविश्वसनीय सी लगने लगती है। अभी कहानी में जिस घटना में जो पात्र आते हें वे आपको यकीन दिलाते हैं कि उस पात्र के साथ ऐसी घटना घट सकती है यानी कहानी या रचना का भी अपना एक तर्क होता है।

लेकिन उस वक्त हमने उपरोक्त रास्ते को न चुनकर पात्रों के दाखिले की समस्या को समझने के लिए सभी के सामने फिर एक सवाल रखा कि क्या हम केन्द्रीय समस्या को घटनाओं से जोड़कर देखें, शायद कोई रास्ता मिले। हो सकता है कि इससे हम घटनाओं व पात्रों के बीच के संबंधों का पता लगा पाएं।

अब हमने केन्द्रीय समस्या व घटनाओं के बीच संबंध तलाशने की शुरुआत की। अब तक आप जान ही चुके हैं कि शेर व मक्खी के बीच घटी एक घटना की वजह से मक्खी को घमंड हो गया। यानी केन्द्रीय समस्या की पैदाइश कहानी की पहली घटना में ही हो गई थी। इस लिहाज से देखें तो इस कहानी में पात्रों का चयन बहुत सोच-समझ कर किया गया नजर आता है। पहली घटना में एक नाचीज-सी मक्खी अपनी हरकतों की वजह से जंगल के सबसे ताकतवर जानवरों में से एक शेर को माफी मांगने पर मजबूर कर देती है। अब इतनी बड़ी घटना के बाद मक्खी में घमंड का भाव पैदा न हो ऐसा तो मुमकिन नहीं। इस घमंड की मजबूत बुनियाद रखने के लिए कहानी में शेर के साथ मक्खी की घटना को काफी विस्तार से दिया गया है व सबसे ज्यादा वक्त इसी पर लगाया गया है। लगभग आधी कहानी इसी घटना का बयान करते-करते पूरी हो जाती है। यानी आप जब कहानी सुनाएं तो इस घटना को

जल्दी से नहीं पूरा किया जा सकता। ऐसा करने पर घमंड की नींव कमजोर रहेगी और उस पर घमंड की इमारत सुनने वाले के दिमाग में ठीक से बन नहीं पाएगी।

फिर इस कहानी में एक और ताकतवर जानवर हाथी आता है जो कि आम तौर पर शांत स्वभाव का माना जाता है। और वह बिना किसी हीले-हवाले के मक्खी की सत्ता को कबूल कर लेता है। यह दूसरी घटना मक्खी के घमंड को सातवें आसमान पर पहुंचा देती है। यानी कहानी गढ़ने वाले ने यह मानकर दूसरी घटना गढ़ी है कि एक घटना से घमंड की पैदाइश तो हो सकती है लेकिन उसका विकास नहीं हो जाता। इस घटना के बाद घमंड से अकड़कर अपना सीना फुला लेना मक्खी के लिए लाजमी हो जाता है। कहानी में इस घटना पर ज्यादा वक्त नहीं लगाया गया है पहली घटना में जिस घमंड की पैदाइश हुई थी दूसरी घटना में घमंड का गुब्बारा तेजी से फुला दिया गया है।

तीसरी घटना में लोमड़ी दाखिल होती है। वह दाखिल तो दूसरी घटना के बीच में ही हो जाती है जब वह घमंड से फूलती मक्खी को देखती है। वह पाती है कि अब जब मक्खी घमंड से अंधी हो चुकी है तो अब इसके घमंड को सहला कर, उकसा कर, उसे तोड़ने का फंदा लगाया जा सकता है। यानी यहां पर किसी बहुत बड़े या ताकतवर पात्र की जरूरत नहीं है। यहां पर अपने दिमाग का इस्तेमाल करने वाला पात्र चाहिए। और पारंपरिक तौर पर कहानियों में लोमड़ी को ताकतवरों की चापलूसी करने वाले लेकिन अक्लमंद जानवर के तौर पर भी दिखाया जाता रहा है। इस घटना को भी हाथी वाली घटना की तुलना में ज्यादा विस्तार दिया गया है।

और आखिरी घटना में दो बड़े जानवरों में से एक के द्वारा खीजकर हार मान लेने तथा दूसरे द्वारा बिना लड़े हार मान लेने की वजह से घमंड में फूली न समाती मक्खी एक कमजोर से माने जाने वाले जानवर लोमड़ी के उकसावे में आकर बहुत ही छोटी मकड़ी से लड़ने उसके जाले में कूद पड़ती है। नतीजे में मकड़ी का बाल भी बांका किए बिना उस मक्खी का घमंड चूर-चूर हो जाता है।

अध्यापिकाओं के साथ बातचीत करके इस नतीजे पर पहुंचा गया कि केन्द्रीय समस्या को चार कदमों - घमंड के भाव की पैदाइश, घमंड के बढ़ने, घमंड तोड़ने के लिए फंदा लगाने तथा घमंड टूटने, में बांटने से चारों घटनाओं व पात्रों के बीच तथा घमंड की जिंदगी व मौत के बीच संबंध को ज्यादा आसानी से समझा जा सकता है। शेर घमंड की पैदाइश में मददगार है तो हाथी घमंड को बढ़ाने में, लोमड़ी उस घमंड का इस्तेमाल कर फंदा लगाने में तथा मकड़ी अपने जाले की मदद से घमंड तोड़ने के लिए कहानी में दाखिल होती है। यह भी बात की गई कि इस तरह से समझने पर कहानी को याद रखना ज्यादा आसान हो जाता है।

कहानी को समझने में शैक्षिक युक्तियों का इस्तेमाल

हमने इस पर भी बात की कि अब तक तो कहानी के नक्शे पर काम करते वक्त कभी इस तरह से बात करने व कहानी को इस अंदाज में समझने की जरूरत नहीं पड़ी तो आखिर इस बार ऐसा क्या हुआ? तब हमारा ध्यान इस बात पर गया कि इस बार हमने कहानी का नक्शा बनाने के काम को कहानी सुनाने के संदर्भ में रखकर देखा था। और कहानी सुनाने के काम को पढ़ना सिखाने के संदर्भ में रखा गया। पढ़ना सिखाने के लिए वर्णमाला व काना-मात्रा रटवाने के बजाए पढ़ने की इच्छा पैदा करना जरूरी माना गया और पढ़ने की इच्छा पैदा करने के लिए कहानी सुनाना और कहानी सुनाने के लिए कहानी को याद रखना जरूरी समझा गया। इस पूरे संदर्भ को गढ़ने के लिए मशहूर शिक्षाविद कृष्ण कुमार के सदाबहार लेख ''कहानी सुनाने की जरूरत'' का तो इस्तेमाल किया ही गया इसके साथ ही पढ़ने पर उनके वीडियो व्याख्यान ''पढ़ने के कौशल'', को सुनना व आपसी बातचीत से उसे समझना भी काम आया।

अब कहानी तो कविता की तरह याद नहीं की जाती। सो कहानी को याद रखने के लिए कहानी का नक्शा बनाने की शैक्षिक युक्ति का इस्तेमाल किया गया। यानी अब हम कहानी का नक्शा सिर्फ नक्शा बनाने के लिए नहीं बना रहे थे बल्कि सुनाने के लिए, कहानी को याद रखने के लिए कहानी के नक्शे का इस्तेमाल किया जा रहा था और उम्मीद यह की जा रही थी कि इस प्रक्रिया में कहानी समझकर याद रह जाए।

पहले हम जब सिर्फ कहानी का नक्शा बनाकर छोड़ देते थे तब उसके साथ कहानी सुनाने की अनिवार्यता नहीं थी, भले ही अलग से कहानी, कविता सुनाने पर काम किया जाता रहा था। शायद इसी वजह से कहानी की घटनाओं के भीतर पाए जाने वाले तार्किक संबंधों को गहराई से पहचानने की जरूरत हमारे सामने पैदा नहीं होती थी और न ही ऐसे सवाल हमारे सामने उभरते थे जो कहानी के बारे में हमारी समझ को और गहरा करें। आप देख सकते हैं कि दो शैक्षिक युक्तियों कहानी सुनाना व कहानी का नक्शा बनाना, को आपस में जोड़ देने से हमारे सामने किस किस्म की नई संभावनाओं के दरवाजे खुल जाते हैं। और यह भी कि दो शैक्षिक युक्तियों को साथ में काम लेने पर उनके मशीनी ढंग से इस्तेमाल किए जाने की संभावनाएं भी कम हो जाती हैं।

यहां इस बात पर भी ध्यान देना चाहिए कि इन दोनों शैक्षिक युक्तियों को जोड़ने का काम एक तीसरी शैक्षिक युक्ति ने किया जो अब तक किए गए वर्णन में इस कदर रची बसी है कि उसे अगर अलग करके देखा न जाए तो वह दूध में मिले पानी की तरह नजर ही न आए। यह शैक्षिक युक्ति है - सहचिंतन की। दोनों शैक्षिक युक्तियों के बीच संबंधों को देख पाना नामुकिन था, अगर हम पहली दोनों युक्तियों पर किए गए काम पर आपस में मिलकर सोच विचार न करते, अपनी मुश्किलों को अपने सहर्मियों के सामने न रखते, उनकी आलोचना व सुझावों को खुले दिमाग से न सुनते व उसके आधार पर अपने काम को समझने की कोशिश न करते। असल में सहचिंतन की शैक्षिक युक्ति सीखने वालों का समुदाय गढ़ने का एक कारगर औजार है, जिसकी हमारी शिक्षा व्यवस्था में तलाश करना भूसे के ढेर में सुई तलाशने जितना मुश्किल काम है।

कहानी के जरिए मूल्यों की समझ

इस तीसरी शैक्षिक युक्ति ने हमारे समूह की एक अध्यापिका को यह टिप्पणी करने का मौका भी दिया कि इस कहानी से तो हमें यह सीख मिलती है कि घमंड का फल बुरा होता है। इस टिप्पणी ने हमारे सामने यह सवाल खड़ा कर दिया कि क्या यह कहानी सिर्फ आखिर में सीख का एक वाक्य कहने लायक ही है या इसमें कुछ और संभावना भी है। वैसे भी कहानी में कोई न कोई मूल्य तो होता ही है लेकिन वह इकहरा या एकपरती हो यह जरूरी नहीं। इसलिए भी उसे किसी एक मूल्य तक समेट देना उस कहानी की बेकदरी करना है।

कहानी पर बनाए नक्शे व उस पर किए गए सहचिंतन ने हमें यह समझने का मौका भी दिया कि कहानी का नक्शा आपको कहानी की तहों में उतरने का रास्ता भी सुझा सकता है। ऊपर-ऊपर से सरल-सी नजर आती यह कहानी थोड़ी गहरी है लेकिन इसकी गहराई का अहसास इसे पढ़ लेने भर से या कहानी के आखिर में उपदेशनुमा वाक्य लिख देने से या लिखा हुआ न होने पर भी अपनी तरफ से जोड़ देने भर से नहीं हो पाता। सतही तौर पर ''घमंड का फल या नतीजा बुरा होता है'' नुमा उपदेश का प्रचार करती नजर आती यह कहानी दरअसल मूल्यों के विकास की सामाजिक प्रक्रिया की एक झलक दे सकती है। असल में यह कहानी अध्यापिकाओं के सामने यह चुनौती भी पेश करती है कि वे इस झलक को बच्चों के दिमाग में कैसे रोशन कर पाएं।

अगर आप अध्यापिका होने के नाते बच्चों में सृजनशील आलोचनात्मक विवेक को गढ़ना अपनी अहम जिम्मेदारी समझती हैं तो इस कहानी की परतें उघाड़ कर उसकी तह तक पहुंचने में बच्चों की मदद करने से बच नहीं सकतीं।

और न ही इस बला से पीछा छुड़ा सकती हैं कि सृजनशील आलोचनात्मक विवेक को दूसरों में विकसित करने से पहले उसे खुद में भी विकसित करना पड़ता है। और इस काम को करने में कई चीजें आपकी मदद कर सकती है जिनमें से एक आपके सहकर्मी व छात्राएं/छात्र हैं, जिनके साथ आप सहचिंतन कर सकती हैं।

पारंपरिक तरीके में कहानी की रग-रग में बसी सीख को बाहर निकाल कर बच्चों के सामने तश्तरी में सजाकर पेश कर देने के पीछे यह मान्यता बहुत ही साफ छिपी होती है कि कहानी को सुनकर समझ लेने व उसमें मजा लेने वाले बच्चे, उसमें छुपे मूल्य को समझने व अपने शब्दों में साफ-साफ तरीके से रखने की काबिलियत नहीं रखते। जबकि हकीकत तो यह है कि हम में से ज्यादातर व्यक्ति किसी कहानी में छुपे मूल्यों को देख पाने, उसे महसूस कर पाने व अपनी भाषा में व्यक्त कर पाने की काबिलियत बच्चों में विकसित कर पाने की काबिलियत खुद नहीं रखते।

तो आप कर यह सकती हैं कि कहानी में आई घटनाओं को पहचानने के बाद बच्चों के साथ बातचीत के जरिए घमंड नामक इंसानी अवगुण व उसके संभावित नतीजों को इस तरह से उजागर करें कि वह दैवीय उपदेश या निरर्थक नीति वाक्य की जगह किन्हीं खास सामाजिक हालातों में बनता व विकसित होता नजर आए। इसके साथ ही यह भी दिखे कि इंसानी अवगुणों के नाश के लिए कोई दैवीय सत्ता प्रकट नहीं होती बल्कि इसी समाज के कुछ सदस्य अपने दिमागी कौशल के इस्तेमाल से उसे अपने तार्किक नतीजों की तरफ धकेलते हैं। वैसे भी देखा जाए तो घमंड जैसा गुण कोई लेकर पैदा नहीं होता। क्या नवजात शिशुओं में घमंड पाया जाता है। यह किसी सामाजिक घटना की गलत तरीके से व्याख्या करने से पैदा हो सकता है। जैसे मक्खी में हो गया था, उसने परेशानी से बचने के लिए शेर द्वारा हार मान लेने का अर्थ खुद के ताकतवर होने से निकाला। ऐसे ही कोई दूसरी घटना इसे बढ़ा भी सकती है। जैसे हाथी के व्यवहार से मक्खी ने अपने द्वारा पहले से निकाले गए नतीजे को खुद ही पुख्ता कर लिया। और संयोग से किसी घटना की वजह से पैदा हुए घमंड को किसी सोची समझी योजना के तहत घटना घटाकर उसे फुस्स भी किया जा सकता है। जैसे इस कहानी में यह काम लोमड़ी ने किया। और बेचारी मकड़ी, उसे तो पता ही नहीं चला कि लोमड़ी ने उसके जाले का इस्तेमाल मक्खी का घमंड तोड़ने में कर लिया है। इंसानी मूल्यों के खून में पाए जाने की परंपरा से उलट, मूल्यों के समाज में विकसित होने की यह धारणा शिक्षा के एक जरूरी व व्यापक मकसद, सोच समझ कर मूल्यों को चुनने व उन्हें बदलने की खुद में काबिलयत पैदा करने पर भरोसा करने की तरफ ले जाएगी। ◆

लेखक परिचयः तकरीबन 21 वर्षों से प्रारंभिक शिक्षा में शिक्षक शिक्षा, शिक्षण सामग्री व पाठ्यपुस्तक निर्माण, शिक्षाक्रम व अनुवाद के क्षेत्र में कार्य। हाल-फिलहाल विभिन्न संस्थाओं के साथ बतौर शैक्षिक सलाहकार कार्यरत हैं।